# The Theory of Bank Rate :-

**Meaning of the Bank Rate :-** बैंक-दर वह दर है जिस पर केन्द्रीय बैंक व्यावसायिक बैंक अथवा मुद्रा-बाजार की अन्य संस्थाओं के बिलों का पुनः बट्टा करता है। अतः बैंक-दर को बट्टा-दर भी कहा जाता है। बैंक-दर, बाजार दर से साधारणतया ऊँची रहती है। बैंक दर को ऊँचा रखने का कारण यह है कि व्यावसायिक बैंक तथा मुद्रा बाजार, केवल संकट-काल में ही केन्द्रीय बैंक से सहायता की माँग करें। जब बैंक-दर बाजार-दर से कम होगी तब व्यावसायिक बैंक केन्द्रीय बैंक की सहायता को अपनी पूँजी के रूप में प्रयुक्त करने लगेंगे। इससे केन्द्रीय बैंक की कठिनाइयां बढ़ जायेंगी। केन्द्रीय बैंक देश की बैंकिंग व्यवस्था के लिए केवल अन्तिम ऋण-दाता के रूप में ही कार्य करता है, अर्थात् जब इन संस्थाओं को किसी दूसरे साधनों से ऋण नहीं मिल पाता, तभी ये केन्द्रीय बैंक के पास सहायता के लिए जाते हैं।

**Evolution of the Bank-Rate Policy :-**

बैंक ऑफ इंगलैंड पहला केन्द्रीय बैंक था जिसने साख नियंत्रण के साधन के रूप में बैंक-दर का प्रयोग सर्वप्रथम, 1839 ई० में प्रारम्भ किया। इस का तात्पर्य यह था कि बैंक ऑफ इंगलैंड कठिनाई अथवा संकट के समय मुद्रा-बाजार एवं व्यावसायिक बैंकों की सहायता की मांग को पूरा करने के लिए हर

Scanned with CamScanner

समय तैयार रहता था। धीरे-धीरे अन्य देशों के केन्द्रीय बैंकों ने भी इस तरीके को अपनाना प्रारम्भ किया।

Theory Underlaying the Bank-Rate Policy.

स्वर्ण प्रमाप के अंतर्गत साख-नियंत्रण के प्रधान साधन के रूप में बैंक-दर का सिद्धांत इस बात पर आधारित था कि केन्द्रीय बैंक के बैंक दर में परिवर्तन के परिणामस्वरूप मुद्रा एवं साख की मांग एवं पूर्ति तथा पूंजी के अन्तर्राष्ट्रीय प्रवाह में परिवर्तन से आंतरिक मूल्य-तल, उत्पादन व्यय तथा व्यापार में अपेक्षित रूप से समायोजन होगा जिससे भुगतान संतुलन की व्यवस्था ठीक हो जायेगी।

जब केन्द्रीय बैंक अपनी बैंक-दर में वृद्धि करता है तो इसके परिणामस्वरूप बाजार की ब्याज दर भी बढ़ जाती है, साख का संकुचन होता है एवं मूल्य-तल तथा मजदूरी कम हो जाती है। इसके परिणामस्वरूप देश में साख का संकुचन होता है। इसके विपरीत जब केन्द्रीय बैंक अपने बैंक-दर को घटाता है तो इसका परिणाम यह होता है कि बाजार की ब्याज-दरों में कमी आ जाती है जिसके परिणामस्वरूप ऋण देना सस्ता एवं लाभदायक हो जाता है। इससे साख का प्रसार होता है।

Scanned with CamScanner

इस प्रकार बैंक-दर में परिवर्तन का देश की आर्थिक व्यवस्था पर निम्न प्रकार से प्रभाव पड़ता है :→

1. सारव-संकुचन एवं प्रसार :→ बैंक दर में परिवर्तन के परिणामस्वरूप बाजार की मुद्रा-दर में परिवर्तन होता है जिससे मुद्रा एवं सारव की मांग प्रभावित होती है। जब बैंक-दर में वृद्धि होती है तो बाजार की ब्याज की दरें भी बढ़ जाती हैं जिससे ऋण लेना लाभदायक नहीं रह जाता, अतएव व्यापारी ऋण की मांग कम कर देते हैं जिससे सारव का संकुचन होता है। इसके विपरित जब बैंक-दर में कमी होती है जो बाजार की दरें भी घट जाती हैं जिससे व्यापारियों के लिए ऋण लेना लाभदायक हो जाता है। इसके फलस्वरूप सारव का प्रसार होता है।

2. आंतरिक मूल्य-तल एवं मजदूरी पर प्रभाव :→

बैंक-दर में वृद्धि के परिणामस्वरूप बाजार की ब्याज-दरों में भी वृद्धि हो जाती है जिससे व्यापारी ऋण लेना कम कर देते हैं। इससे उत्पादन कम होता है तथा औद्योगिक और व्यापारिक क्रियाओं में शिथिलता आ जाती है। इससे आंतरिक मूल्य-तल एवं मजदूरी में भी कमी आ जाती है। इसके विपरित, बैंक-दर में कमी के परिणामस्वरूप बाजार-दर में कमी आ जाती है जिससे व्यापारियों के लिए ऋण लेना लाभदायक हो जाता है तथा व्यापारी अधिक ऋण लेने लगते हैं। इससे औद्योगिक एवं व्यापारिक कार्यों को प्रोत्साहन

Scanned with CamScanner

मिलता है तथा आंतरिक मूल्य-तुल एवं मजदूरी में धीरे-धीरे वृद्धि होने लगती है।

3. विनिमय दर पर प्रभाव :→ बैंक-दर में परिवर्तन का विनिमय-दर पर भी महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। बैंक-दर में वृद्धि से बाजार की दरों में भी वृद्धि हो जाती है जिसके देश में बाहर से विदेशी पूंजी आने लगती है। इसके फलस्वरूप देश का भुगतान संतुलन अनुकूल हो जाता है तथा विदेशी विनिमय की दर भी अनुकूल हो जाती है। इसके विपरीत जब बैंक-दर में कमी होती है तो ब्याज की दरें भी कम हो जाती है जिससे देश की पूंजी का विदेशों की ओर प्रवाह होने लगता है। इसके फलस्वरूप देश का भुगतान संतुलन इसके विपक्ष में होने लगता है तथा विनिमय की दर भी प्रतिकूल होने लगती है।

4. पूंजी के अन्तर्राष्ट्रीय प्रवाह पर प्रभाव :→ बैंक-दर में परिवर्तन का प्रभाव पूंजी के अन्तर्राष्ट्रीय प्रवाह पर भी पड़ता है। बैंक-दर बढ़ जाने से बाजार की ब्याज-दर भी बढ़ जाती है। इसका परिणाम यह होता है कि इस बढ़ी हुई ब्याज दर से लाभ कमाने के लिए बाहर से अल्प-कालिक पूंजी देश से बाहर जाने लगती है। इसके विपरीत जब बैंक-दर कम हो जाती है तो ब्याज की अन्य दरें भी कम हो जाती है जिससे अल्पकालिन पूंजी देश से बाहर जाने

Scanned with CamScanner

लगती है। इस प्रकार बैंक-दर में कमी या वृद्धि से अन्तर्राष्ट्रीय पूंजी का प्रवाह भी प्रभावित होता है।

क्रमशः

Scanned with CamScanner